पत्रिका 5/12/2019

राजभवन में बैठक: कुलपतियों ने कुलाधिपति को बताई कमियां और खूबियां

आरजीपीवी की ई-बुक्स व प्रोजेक्ट से अब पढ़ सकेंगे डीएवीवी के छात्र

हर यूनिवर्सिटी की कमियां दूर करने के लिए बनेगा संघ

इंदौर @ पत्रिका. प्रदेश की सभी यूनिवर्सिटी में सुधार को लेकर अब संयुक्त प्रयास होंगे। एक यूनिवर्सिटी में चल रहे प्रोजेक्ट का फायदा बाकी यूनिवर्सिटी भी उठाएगी। नॉलेज शेयरिंग के लिए किताबें और प्रोजेक्ट साझा किए जाएंगे। जरूरत पड़ने पर इंफ्रास्ट्रक्चर भी इस्तेमाल होगा। सभी यूनिवर्सिटी की कमियां दूर करने के लिए इस प्रस्ताव पर बुधवार को चर्चा हुई। कुलपतियों की यह बैठक राजभवन में कुलाधिपति लालजी टंडन की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में सभी यूनिवर्सिटी की कमियों और खूबियों का प्रेजेंटेशन हुआ। ज्यादातर यूनिवर्सिटी ने फैकल्टी की कमी की बात दोहराई। सैद्धांतिक सहमति बनी कि कई मुद्दों पर सभी यूनिवर्सिटी अब साथ मिलकर काम करेंगी। इसी प्रस्ताव पर राजीव गांधी टेक्निकल यूनिवर्सिटी के कुलपति ने बताया हाल ही में बड़ी संख्या में ई-बुक्स खरीदी गई हैं। संघ (कंसोर्टियम) के तहत बाकी यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी भी इन्हें एक्सेस कर सकते हैं।

आरजीपीवी ने परीक्षा के लिए ऑटोमेशन सिस्टम का भी उदाहरण देते बताया बाकी यूनिवर्सिटी अपनी जरुरत के लिहाज से बदलाव कर सकती हैं। उन्हें आरजीपीवी टेक्निकल सहयोग प्रदान करेगी। एक्सटेंशन की लागत संबंधित यूनिवर्सिटी वहन करें। बाकी यूनिवर्सिटी ने भी अपनी-अपनी खूबियां शेयर करने में सहमति जताई। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो. रेणु जैन ने बताया, कि डीएवीवी में सबसे बड़ी कमी फैकल्टी की है। नैक की रिपोर्ट में भी हमें रिसर्च में सबसे कम अंक मिले। अब तक हुई रिसर्च में क्वालिटी अच्छी है लेकिन, फैकल्टी कम होने से रिसर्च की संख्या बढ़ नहीं पा रही। फैकल्टी की भर्ती के बाद रिसर्च की संख्या में भी बढ़ावा होगा।

शेयरिंग से घटेगी डुप्लीकेसी, करोड़ों बचेंगे

कंसोर्टियम में भोज यूनिवर्सिटी, जीवाजी यूनिवर्सिटी, जबलपुर की कृषि यूनिवर्सिटी, छिंदवाड़ा यूनिवर्सिटी और इंदौर की डीएवीवी के कुलपति सदस्य होंगे। बैठक में कई ऐसी कमियां सामने आईं, जिनकी भरपाई दूसरी यूनिवर्सिटी से आसानी से की जा सकती है। जीवाजी यूनिवर्सिटी की कुलपति ने कहा, हमारे पास 18 करोड़ के इक्विपमेंट लाइफसाइंस विभाग में हैं। बाकी यूनिवर्सिटी के रिसर्च स्कॉलर आकर इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। भोज के प्रो. जयंत सोनवकर ने टीवी चैनल के जरिए कोर्स चलाने और डीएवीवी की कुलपति ने ईएमआरसी में चल रहे ऑनलाइन कोर्सेस की जानकारी दी। कृषि यूनिवर्सिटी ने प्रस्ताव रखा कि छतरपुर वालों के पास 400 एकड़ जमीन है, लेकिन इस पर निर्माण के लिए पैसा नहीं है। जमीन पर हम प्लांट लगा दें तो इसकी कमाई से ही बिल्डिंग बन जाएगी। प्रो. सोनवलकर ने बताया, यूनिवर्सिटीज के बीच शेयरिंग होने से डुप्लीकेसी की आशंका काफी हद तक कम हो जाएगी।

महू की आंबेडकर यूनिवर्सिटी ने भी बनाई जगह : रिसर्च के लिए मिलेगी 1-1 करोड़ तक की ग्रांट

यूजीसी स्ट्राइड के लिए हुआ डीएवीवी का चयन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. नैक से ए प्लस पाने के बाद देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के खाते में एक और उपलब्धि दर्ज हुई है। यूजीसी की स्ट्राइड के तहत शहर की डीएवीवी और महू की भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी का चयन किया गया। इन दोनों संस्थानों को रिसर्च के लिए 50 लाख से एक-एक करोड़ रुपए तक की ग्रांट दी जाएगी।

रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन ने स्कीम फॉर ट्रांसडिसिप्लिनरी रिसर्च (स्ट्राइड) की घोषणा की थी। इसके तहत ऐसी रिसर्च को बढ़ावा दिया जाना है जो वैश्विक रूप से महत्व रखती हैं। सरकार ये रिसर्च आम जनता तक पहुंचाने का भी प्रयास करेगी। यूजीसी ने बुधवार को उन शैक्षणिक संस्थानों की सूची जारी की जिनकी रिसर्च स्ट्राइड के लिए चुनी गई है। इनमें 16 एडेड यूनिवर्सिटी, 18 एडेड कॉलेज और 1 प्राइवेट कॉलेज है। प्रदेश से सिर्फ इंदौर की देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी और महू की डॉ. भीमराव

आंबेडकर यूनिवर्सिटी को ही जगह मिल सकी है। डीएवीवी के स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए यूनिवर्सिटी को इस सूची में जगह मिली। स्ट्राइड के लिए तमिलनाडु के 7, महाराष्ट्र के 6, केरल के 5, कर्नाटक के 3, बंगाल के 1, आंध्रप्रदेश, मणिपुर व उत्तरप्रदेश के 2-2, हरियाणा, नागालैंड, झारखंड, मिजोरम और आसाम के 1-1 शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं।

तीन साल में करना होगा प्रोजेक्ट : स्ट्राइड के लिए डीएवीवी का जो प्रोजेक्ट चुना गया उसे स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की फैकल्टी प्रो. विशाखा कुटुंबले ने तैयार किया जो आर्थिक और सामाजिक विकास से जुड़ा है। प्रो. कुटुंबले के अनुसार इसकी अवधि ग्रांट की पहली किश्त जारी होने से तीन साल तक की रहेगी। कुलपति प्रो. रेणु जैन ने स्ट्राइड के लिए डीएवीवी का प्रोजेक्ट चुने जाने पर खुशी जताते हुए कहा कि ए प्लस पाने के बाद यह यूनिवर्सिटी के लिए एक और बड़ी उपलब्धि है। नैक टीम ने रिसर्च बढ़ाने का सुझाव दिया था। इसके लिए यूनिवर्सिटी में संसाधन बढ़ाए जाएंगे। अगले तीन साल में ज्यादा से ज्यादा स्तरीय रिसर्च करने की कोशिश रहेगी।